महादेव मुण्डा खूंटी

पागु सेंदेरा की मुण्डारी लोककथा

फागुन का महीना खत्म होने ही वाला है, होलिका दहन एवं उसके दूसरे दिन होली का त्योहार भारत के लगभग हर हिस्से में बहुत ही उल्लास और जोश के साथ मनाया जाता है, किंतु यदि मुंडा जनजाति(होड़ो) की आदिम परंपरा एवम लोक कथाओं पर नजर डाले तो फागू नेग एवम सेंदरा की परंपरा दिखाई पड़ती है। मुंडा जनजाति प्राचीन काल से ही फागू नेग और सेंदरा की परंपरा को पीढ़ी दर पीढ़ी करता आया है, चूंकि होली एवं फागू परब वर्ष के एक समय में होता है इसी कारण लोगो द्वारा इसे एक समझ लिया जाता है जबकि दोनो में कोई समानता नहीं है। आइए हम प्राचीन काल के उस अद्भुत सफर पर चलते है जब फागुन पूर्णिमा के समय फागू नेग एवम सेंदरा परंपरा की नीव पड़ी।

यह कहानी प्राचीन काल यानी नंगपरिया की है जब मुंडा जनजाति झारखंड प्रदेश तक नही पहुंचे थे। मुंडा जनजाति के पुरखे काबिलाई समूह में शांतिप्रिय ढंग से रहते थे। लगातार बाहरी अक्रमणो के कारण मुंडा जनजाति के पुरखो को भारत उपमहादेश के कई अलग अलग इलाकों में बसाए गए मुंडा गाढ़ा(मुंडा किंगडम) को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा था। मुंडा दिसोम, झारखंड मुंडाओं का अंतिम पड़ाव रहा और यहां तक पहुंचने का यह सफर बहुत लंबा चला था। मुंडा अगुवागण एवं जानकारों से प्राप्त जान

कारी के अनुसार फागू नेग एवम सेंदरा की परंपरा का संबंध शायद बिंग देया चल(विंध्याचल पर्वत) से रहा होगा इसी कारण इस कहानी को इस पर्वत के इर्द गिर्द ही लिखा जा रहा।

मुंडा कबीलों पर बाहरी आक्रमण के कारण इन्हें घूमंत कबीले की तरह सही स्थान की खोज में भटकना पड़ा उस वक्त इनकी स्थिति बहुत ही दयनीय थी, जब मुंडा पुरखो का दल विंध्याचल पर्वत श्रेणियों की तराई इलाको तक पहुंचा था तब उनके समक्ष सबसे बड़ी चुनौती थी इस बीहड़ जंगल और ऊंचे पर्वत में प्रवेश कर रहना या इसे पार करना। वह इलाका खूंखार जंगली जानवरों से भरा हुआ था। इस बीहड़ इलाके में प्रवेश के लिए मुंडा पुरखो ने तय किया कि वे एक सुगम रास्ते का चयन करेंगे जिसमें कबीले को कम से कम नुकसान हो और उन्हें एक रास्ते का पता चला। लेकिन चिंता की बात थी कि वह रास्ता विशाल अजगर सांपो का बसेरा था। उस रास्ते से किसी इंसान या जानवर के पार होने का मतलब मौत था, क्योंकि ऐसा बताया जाता है कि वे सीधे ऊपर से सर की तरफ से समूचा शिकार को निगल जाते थे या फिर अपनी सांस से शिकार को खींच लेते थे।

मुण्डारी में अजगर सांप के पहाड़ पर रहने के कारण उसे #बुरुबिंग कहते हैं। सामान्य अजगरों को #तुनिल बिंग या #दुनिल बिंग कहते हैं। पहाड़ वाले अजगर(बुरुबिंग) की विशालतम प्रजाति को #संगसुड़ी_बिंग कहते हैं। वैसा ही जलाशय में रहने वाले विशाल सांपों को #गाड़ा बिंग या #रंगरुड़ी बिंग कहते हैं। इसके अलावे मझौले आकार के जो अजगर पहाड़ के तराई पर होते थे। उन्हे #जाड़ा बिंग कहते हैं।

मुंडा जनजाति के पुरखो ने क्षेत्र का मुआयना कर तरह तरह के अजगर सांपो के बसेरे को देखा, जंगल बेहद घना था इसलिए यह निर्णय लिया गया कि पतझड़ आने तक पर्वत के तराई में रुका जाए। पतझड़ के मौसम में जब अधिकतम वृक्षों के पूराने ,बूढ़े और सूखे पत्तियां झड़ चुकी होंगी तब जंगल में आसानी से हर तरफ साफ साफ देखा जा सकेगा और आगे बढ़ना आसान होगा।
फागु चण्डू(फागुन मास) का नया चांद निकल चुका था और अधिकतम वृक्षों के पूराने ,बूढ़े और सूखे पत्तियां झड़ चुके थे। आदिम मुण्डाओं का कबिला के बूढ़े बुजुर्ग आगे प्रस्थान के लिए रणनीति बनाने लगे।
सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि सबसे पहले मंझौले आकार के सापों को रास्ते से हटाना है, यदि उसे मारा न गया तो सांपो का झुंड पूरे कबीले को मार देगा। उन्हें पता था कि सांप रोज रात को विश्राम करने के लिए #रिसा_जाड़ा और #कुला_जाड़ा गाछों में चढ़ जाते थे फिर सुबह को शिकार तलाशने के लिए जमीन पर लौट आते थे।

#फागुन_पुर्णिमा की पहले वाली रात थी। जैसे ही सभी #जाड़ा_बिंग यानि मंझौले अजगर #रिसा_जाड़ा, #कुला_जाड़ा में चढ़ गये। कबीले के लोगो ने गाछ के नीचे सूखी पत्तियां और झाड़ियों को जमा करके #सिङबोंगा, #बुरुबोंगा, #बिरबोंगा को अरदास किए और सूखी पत्तियों पर आग लगा दिए। आग की तपन और धुंवा से कुछ सांप नीचे गिर कर जल गये और जिस गाछ के सांप नहीं गिरे, उन गाछों की एक एक टहनियों को काट कर गाछ के साथ, सांपों को गिरा दिए गए और अपने प्राचीन हथियारों से टुकड़े करके फेंक दिए गए। टुकड़ा करके फेंकनी की विधान को मुण्डारी में #डुण्डी_हाटिंग कहते हैं।

प्राचीन समय से ही कबिलाई लोगो में एक मिथ्य होता था एक भ्रम था कि कुछ करिश्माई सांप फिर से जुड़ जाते हैं और जीवित होकर बदला चुकाते हैं। नेवलाओं की भी एक दंतकथा है, सांपों का मध्य भाग खाकर, विशिष्ट जड़ी बूटी से सांपों को फिर से जोड़ देते हैं। सभी नेवलों को बिष या जहर निवारक जड़ी की जानकारी होती है।
यही वजह था कि जले हुए और मृत सांपों को खंडित करके चारों दिशा में फेका गया था। फेंकने की यह विधान आज भी #डुण्डी_हाटिंग के नाम से अस्तित्व में है।
पर्वत पर रहने या पार करने के लिए मुंडा कबीले ने अपनी पहली चुनौती पर विजय प्राप्त करा था। मुंडा कबीले के सामूहिक प्रथम प्रयास में मिली विजय के याद में वर्तमान में फागुन पूर्णिमा के पहले दिन गाँव के युवा कुएँ की ओर जानेवाली पगडंडी के किनारे एक एरंड पेड़ गाड़ते हैं। पेड़ को सूखी घास-फूस खैर, पुआल इत्यादि से ढंक दिया जाता है। इसमें आग लगा दी जाती है और आग लगाने के बाद युवक उछलते-कूदते और किलकारियाँ भरते हुए अपनी कुल्हाड़ियों से पेड़ को काट डालते हैं,

ऐसा उन्ही पुरखो की याद में किया जाता है जिन्होंने #जाड़ा_बिंग (मझौले अजगर) को मारने के वक्त पेड़ की टहनियों को काटा था और परिस्थिति के खराब रहने पर भी वीरता का परिचय दिया था। #फागु_जलाकर फिर हाबा-हाबा करके #काटकर उस एतिहासिक घटना को आज भी याद किया जाता हैं। एक ही झटका में काटने वाले युवाओं को #सांडी यानी #मर्द और दो तीन वार करने वालों को #एंगा यानि #जानी संज्ञा से शबासी देने और दुतकारने का रिवाज है। अन्त में डाली और टहनियों को छोटा-छोटा टुकड़े करके, #डुण्डी वितरण करते हैं।

होड़ो पूरखे लोग एक बाधा को पार करके, उत्साहित हो गये थे लेकिन इससे बड़ी चुनौती उनका आगे इंतजार कर रहा था। अब दुसरे दिन विशाल #संसुड़ी_बिंग यानि सेमल वृक्ष का विशालकाय अजगर को रास्ते से हटाने या मारने की चुनौती थीं।

मुण्डा कबीले के बूढ़े पूरखों को खबर थीं कि वह विशाल अजगर सीधे सिर पर ही हमला करके, गोटा निगल जाता था। बहुत बड़ी चुनौती थी। उस #संसुड़ी_बिंग को मारे बिना वहां पर शांति से रहना या आगे बढ़ना भी नामुमकिन था।

मुंडा कबीले ने एक रणनीति बनाई और रणनीति के तहत उबलते हूए गरम खौलते दुध से जलाकर मारना था इसीलिए तत्काल दूध का जोगाड़ किया गया एवम एक मिट्टी का चूल्हा बनाकर दूध को मिट्टी बर्तन में गरम किया गया। लेकिन गरम दूध के बर्तन को माथे में लेकर जायेगा कौन कोई भी तैयार नहीं हो रहा था। अन्त में एक #गुमि_बुड़िया नाम की वृद्ध महिला तैयार हो गयी।
वह सिर के ऊपर बिण्डा रखी। फिर बिण्डा के ऊपर एक चिप्टा पत्थर।
जब दूध उबल गया तो। माटी का तावा(हांडी) को गुमि बुड़िया के सिर पर, पत्थर के ऊपर रख दिया गया था। वह अपनी लाठी लेकर शीघ्रता से सीधे उस विशाल सेमल पेड़ की नीचे चली गयी।
विशाल अजगर ने ऊपर की तरफ से #गुमि_बुड़िया की सर के बदले, गरम दुध वाला तावा(हांडी) में अपना मुंह मारा। गरम दूध होने के कारण विशाल अजगर दोनों आंखों से अंधा हो गया था और दर्द से छटपटाते हुए नीचे गिरा।
कबिला के सभी लोगों ने बड़ा-बड़ा पत्थर उठाकर हमला कर दिया और #दुनिल यानि कूच कर मार दिया। खूशी से #बिंग_देया यानि सांप के पीठ पर ,उछल कूद करते हूए, आगे बढ़े। अन्त में उसे भी टुकड़े टुकड़े किए।

इस इतिहासिक घटना की दुसरे दिन की वीरता से निम्नलिखित अनुष्ठान एवं पारम्परा की शुरुआत हुई।
1). विशाल #संसुड़ी_बिंग का नया नाम #तुनिल और #दुनिल रखे गये।
2). अजगर सांप की पीठ पर नाचते हूए, बिहाड़ पहाड़ पर चढ़े थे। इसलिए पहाड़ का नाम मुण्डारी में #बिंगदेया_चल_बुरु रखे जो बाद में विंध्याचल पर्वत के नाम से जाना जाने लगा।
3). फागुन पूर्णिमा के दिन गाँव के युवक झुंड बनाकर, नगाड़ा मान्दर बजाते और शिकार गीत (जापी) गाते हुए पास के जंगल में जाते हैं और उसमें से सेमल की टहनी काट कर गाते-बजाते गाँव लौटते

हैं। गाँव की महिलाएं उनका स्वागत करती हैं और फिर सभी शिकार गीत के साथ शिकार नृत्य करते हुए जले हुए पेड़ वाले स्थान पर पहुँचते हैं। गाँव के पाहन को आदर पूर्वक बुलाया जाता है। पाहन वहाँ आकर #सिङबोंगा, #बुरुबोंगा, #बिरबोंगा #इकिरबोंगा आदि सभी प्राकृतिक शक्तियों के नाम लेता है और बलि चढ़ाते हुए अगले दिन होने वाले सामूहिक सेंदरा अभियान की सफलता के लिए प्रार्थना करते है। सेमल की टहनी में भी आग लगा दी जाती है। इसके बाद सभी घर लौटकर घर के सदस्य अपने पुरखों को याद करते हैं एवम अगले दिन के लिए तीर धनुष इत्यादि तैयार करते है। अगले दिन गाँव के युवक जंगल में सामूहिक सेंदरा के लिए जाते हैं। फागु काटकर, तीन दिनों तक सेन्देरा की परंपरा होती है।

4) .रोज शाम को सेंदरा से नाचते गाते हूए वापस गांव आना है। घर पहूंचने पर, सभी पूरषों को पैर धोना, पानी पिलाना और जोअर करके प्रेम से हाल-समाचार पूछना।

5). सामूहिक सेंदरा में जो भी शिकार कर लाया जाता है उसे आपस में बांटा जाता है यहां तक यदि कुता भी सामूहिक शिकार में भाग लिए हो तो उसे भी उसका हिस्सा प्राप्त होता है।

आज यह परंपरा मुंडा जनजाति की आने वाली पीढ़ियों को उसके इतिहास से जोड़ती है।

👉मुण्डाओं की पौराणिक सेन्देरा की शर्तें एवं रुढ़ी विधान भी है जैसे :- पशु के प्रजनन काल में शिकार नही करना, गर्भवती मादा जानवर का शिकार नही करना, छोटे पशु शावको का शिकार पाप है, जो पशु फसल या मवेशियों को नुकसान पहुंचाए उनका शिकार किया जा सकता है, दुर्लभ जानवरो के शिकार न हो....

🙏वर्तमान समय में वन विभाग के दिशा निर्देश में ही अपनी परंपराओं को आगे बढ़ाना आवश्यक है। वन विभाग के निर्देशों का अनुपालन और विलुप्तप्राय एवं राष्ट्रीय पशु-पक्षियों का संरक्षण करना है।

सोर्स एवं क्रेडिट👇👇

1).शोधकर्ता गोमके महादेव मुंडा, खूंटी https://youtu.be/EKARwvPJ7X4?si=i8KyVzjTYj82CaUQ
2).https://www.jagran.com/jharkhand/ranchi-how-the-festival-of-colours-holi-celabrated-in-different-parts-of-jharkhand-and-how-jharkhand-tribal-society-celebrate-holika-dahan-know-details-22551461.html
3).https://www.hindusthansamachar.in/Encyc/2023/3/4/holi-festval-in-schedule-tribes-society.php
4).https://www.livehindustan.com/jharkhand/ranchi/story-munda-tribe-holi-festval-1828037.html
5).The Mundas and their Country by SC ROY
5). झारखंड के आदिवासियो के बीच एक एक्टिविस्ट के नोट by वीर भारत तलवार

Note:- Post में लिखे गई बातो को पढ़ने में रुचिकर बनाने के लिए रोचक बातो को सम्मिलित करने की कोशिश की गई है ताकि पाठक को पढ़ने में रुचि आए। इस लेख में लिखी गई कहानी के विषय में मुंडा जानकर गोमके लोगो से जानकारी मिली थी तथा अखबार में लिखे गए आर्टिकल्स तथा कुछ writers के बुक्स का भी सहारा लिया गया है। यदि लेख में अनजाने में कुछ त्रुटी हुई हो तो अपने

सलाह कॉमेंट बॉक्स में देने की कृपा करे साथ ही लेख आपको कैसा लगा जरूर बताएं या फिर इस लोककथा से संबंधित कोई लोकगीत हो तो कॉमेंट बॉक्स में जरूर लिखे।

Post:- ✍️✍️ Rakesh Munda

हे सिंङबोंगा🙏🙏
हे बुरूबोंगा🙏🙏
हे बिरबोंगा🙏🙏
इकीर बोंगा🙏🙏
ओतेऐंगा🙏🙏
आंञ सा:ते आपे सोबेन हागा मिसी को फा:गु सेन्दरा बोंगा नेग रेआ माइन सम जोअर🙏
#जापी_लोकगीत_!

सेंदेरा कोड़ा को
सार सिंड़ाए-सोंड़ोएआ बाइ
सार सिंड़ाए-सोंड़ोएआ...!

कारेंगा कोड़ा को
कापी जिलिब-जिलिबा बाइ
कापी जिलिब-जिलिबा....!

#हिन्दी_में_भावार्थ:-

घनघोर जंगल के बीच, चट्टान के ऊपर एक झोपड़ी थी!
उस झोपड़ी में पति-पत्नी और किशोर बेटियां थीं।
अचानक, अधेड़ पूरुष, युवा एवं किशोरों पूरुषों को देखकर , बेटियां घबरा गयीं थीं।

तब मां बताती है कि, सभी वयस्क और युवा पूरुषों के हाथ में तीर धनुष है। इसलिए, सेंदेरा करने वालों की कबिला है। देखो लम्बा-लम्बा जो है तीर-धनुष है!

सभी किशोरों के हाथ में टांगी एवं फरसा है। इसलिए यह भी शिकारी काबिला की सहयोगी टोली है। जो हथियार चमक रहा है। उसको कापी या फरसा बोलते हैं।

महादेव मुण्डा,खूंटी, झारखंड